Volume 12, Issue I, Dec 2022, ISSN: 2277-1255
BHARTIYAM INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION & RESEARCH
A quarterly peer reviewed International Journal of Research & Education

अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में मूल्य मीमांसा

*** सारिका**

वर्तमान सन्दर्भ में मनुष्य के आचरण में तीव्रता से आ रही मूल्यों की गिरावट को देखकर प्रायः सभी प्रबुद्ध विचारक चिन्तित हैं। मूल्यों की उपादेयता जितनी आज अनुभव की जा रही है, उतनी पहले कभी नहीं की गई, क्योंकि आज हम एक गहन संक्रान्तिकाल **(ज्तंदेपजपवदंस च्मतपवक)** से गुजर रहे हैं। हमारे परम्परागत मूल्य **(ज्तंकपजपवदंस टंसनम)** कुछ तो पूर्णतः विघटित हो चुके हैं और कुछ बड़ी तीव्र गति से विघटित हो रहे हैं।

एक राष्ट्र की गुणवत्ता उसके नागरिकों पर निर्भर करती है तथा शिक्षा की गुणवत्ता उसके शिक्षक समाज पर निर्भर करती है। शिक्षक एक ऐसा आदर्श एवं पथप्रदर्शक है जो आज के विद्यार्थी को भावी नागरिक के रूप में तैयार करता है, इसीलिए अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में मूल्यमीमांसा का होना आवश्यक हो जाता है।

अध्यापक शिक्षा :–

अध्यापक शिक्षा वह ‘ ौक्षिक आयोजन है जिसमें विभिन्न स्तरीय व विभिन्न वर्गीय अध्यापकों को इस प्रकार से शिक्षित करने के लिए प्रयास किया जाता है कि आने वाली संतति को ज्ञान और मूल्यों के हस्तांतरण के साथ ही उनके समस्त ‘ ौक्षिक एव विकासात्मक दायित्वों को ग्रहण एवं वहन करने में सक्षम हो सकें और उनमें तकनीकि कुशलता, वैज्ञानिक चेतना, संसाधन सम्पन्नता और नवचारिता के साथ सांस्कृतिक उद्दीपन तथा मानवता बोध का समन्वयात्मक विकास करना संभव हो

* Assistant Professor, M.D. College of Education, Bahadurgarh,

सके। शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों को छात्राध्यापक कहा जाता है। अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के अन्तर्गत छात्राध्यापक जिन मूल्यों को आत्मसात करते हैं, उनसे ये अपेक्षा रहती है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के पश्चात् विभिन्न ' ौक्षिक क्षेत्र में सेवा देते हुए अपने विद्यार्थियों में उन मूल्यों को हस्तान्तरित कर सकें।

अर्थात एक शिक्षक के आदर्श मूल्यों को स्वीकार कर लें। सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की श्रृंखला में अध्यापक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा की कोई भी योजना हो, उसके क्रियान्वन का सूत्रधार अध्यापक ही होता है। अतः सर्वप्रथम अध्यापकों में विविध नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का आभ्यन्तरीकरण अत्यन्त आवश्यक है। जिस प्रकार दीप से दीप जलता है, उसी प्रकार नैतिकता, नैतिकता को जन्म देती है। अध्यापक छात्रों के समक्ष नैतिक आदर्श प्रस्तुत करें, जिन्हे देखकर अथवा अनुभव करके विद्यार्थी भी नैतिक आचरण का अनुसरण करेंगें।

मूल्य मीमांसा :–

मूल्य मोमांसा से अभिप्राय किसी वस्तु में निहित गुणों की मीमांसा से है, जो कि उसे किसी अन्य वस्तु से भिन्न बनाते हैं। मूल्य वह गुणों का सम्मुचय है, जो कि वस्तु विशेष में निहित होंगें तथा वह वस्तु उस विशि" ट गुण समूह से पहचानी जाएगी। किसी भी वस्तु के कार्य व व्यवहार में उसका मूल्य प्रतिबिम्बित होता है तथा वह वस्तु अपने यर्थाथ स्वरूप का बोध मूल्यों के माध्यम से ही कराती है। मूल्य रूप धर्म से अलग लक्षणों में वह वस्तु मूल्यहीन मानी जाएगी।

जैसे :– **अग्नि का मूल्य है – ऊ"णता ।**

* Assistant Professor, M.D. College of Education, Bahadurgarh,

जल का गुण धर्म है – ‘ ीतलता ।।

अर्थात अग्नि के कार्य एवं व्यवहार में ऊ” णता तथा जल के कार्य व व्यवहार में ‘ ीतलता परिलक्षित होनी चाहिए और यदि ये तत्व इन गुणों को या इनके प्रभाव को उत्पन्न नहीं करते है तो इन्हें क्रमशः अग्नि व जल नहीं कहा जा सकता अर्थात अग्नि और जल के रूप में ये वस्तुएँ या तत्व मूल्यहोन माने जायेंगें।

‘‘मूल्य मीमांसा’’ दर्शन ‘ ाास्त्र का अभिन्न हिस्सा है, चाहे वह दर्शन किसी भी विधा का हो – भारतीय अथवा पाश्चात्य।

अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राध्यापक में विभिन्न मूल्यों एवं मूल्यपरक शिक्षा का विकास करने के लिए अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में निम्नलिखित को सम्मिलित किया जा सकता है :–

1) **शिक्षा दर्शन व मूल्य :–**

इसके अन्तर्गत भारतीय एवं पाश्चात्य सन्दर्भ में दार्शनिक विचार, मानव जीवन के उद्देश्य, यूनेस्को के आदर्श व संस्तुतियाँ, अन्तर्रा” ट्रीय अवबोध, ‘ ाक्ति एवं मानवाधिकारों के लिए शिक्षा, मूल्यों का दर्शन, सौन्दर्यपरक एवं सांवेगिक मूल्य, बौद्धिक तथा भौतिक संस्कृति के मूल्य, स्वतन्त्रता, समानता, भ्रातृत्व के आदर्श, भारतीय मूल्यों का दर्शन आदि।

2) **शिक्षा मनोविज्ञान तथा मूल्य :–**

व्यक्ति का व्यक्तित्व, व्यक्तित्व का विकास – अहं, स्मृति व स्वः भारतीय व पाश्चात्य विचारधाराऐं, अस्तित्व के भाग – अचेतन, अवचेतन, भौतिक, तार्किक, अनिवार्य, सौन्दर्यपरक, नीतिपरक, मनोआध्यात्मिक।

3) **अनुसंधान व मूल्य :–**

इसमें छात्राध्यापकों को अनुसंधान के माध्यम से तार्किकता, क्रमबद्धता, वस्तुनि" ठता, विश्वसनीयता आदि मूल्यों का विकास संभव हो सकता है।

इसके अतिरिक्त अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में मूल्य मीमांसा के सन्दर्भ में कतिपय बिन्दुओं का अनुप्रयोग करके छात्राध्यापकों में मूल्यसंवर्धन संभव हो सकेगा, जैसे :–

- पाठ्यक्रम में इस प्रकार की सामग्री समावि" ट हो जिससे छात्राध्यापक शिक्षकों के सत्यपालन, सदाचार, प्रेम, ' ाान्ति, अहिंसा आदि मानव–मूल्यों का आभ्यन्तरीकरण सरलतापूर्वक हो सके।
- मूल्यपरक शिक्षण से सम्बन्ध मानक पुस्तकें, पुस्तिकाएँ तथा अन्य सहायक सामग्री प्रत्येक शिक्षा महाविद्यालय में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराई जायें।
- महापुरूषों के जन्मदिवसों को सुनियोजित ढंग से मनाया जाए ताकि छात्राध्यापक उनके कार्यों व उनके जीवन से परिचित हो सकें और उनसे विविध नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को आत्मसात् करने हेतु प्रेरित हो सकें।
- भा" ाण, सम्भा" ाण, वाद–विवाद, एकांकी, कवि–सम्मेलन आदि समय–समय पर आयोजित किए जाएं, जिनके विषय विविध जीवन–मूल्यों से प्रभावित हों, जिनका सुप्रभाव पड़ सके।
- 'मूल्कपरक शिक्षा' अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग होना चाहिए, जिसके एक–दो प्रश्न–पत्र मूल्यपरक शिक्षा भारत की सामाजिक संस्कृति, भारतीय जीवन दर्शन, भारत की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं आदि पर रखे जान चाहिए। समय–समय पर छात्राध्यापक शिक्षकों के व्यवहार एवं कार्यों की अनौपचारिक समीक्षा की जावे जिसमें वस्तुनि" ठता का ध्यान रखा जाए। श्रे" ठ व्यवहार एवं उदाहरणीय कार्य के द्वारा आदर्श स्थापित करने

Volume 12, Issue I, Dec 2022, ISSN: 2277-1255
BHARTIYAM INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION & RESEARCH
A quarterly peer reviewed International Journal of Research & Education

वाले छात्राध्यापकों को महाविद्यालय में सम्मान एवं प्रोत्साहन प्रदान किया जाए ताकि अन्य छात्राध्यापक भी उनका अनुसरण करें।

- विविध नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक आदि मूल्यों को आत्मसात् करने में शिक्षा महाविद्यालय की प्रार्थना–सभा के अवदान को नकारा नहीं जा सकता। अतः इस दैनिक कार्यक्रम को अधिक सुनियोजित एवं सजीव तथा मूल्यपरक (**टंसनम व्तपमदजमक**) बनाया जाना चाहिए।
- प्रायः यह देखने में आता है कि पुस्तकालय मात्र पुस्तकों का रख–रखाव एवं आदान–प्रदान करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। मूल्योन्मुख शिक्षा के सफल कार्यान्वयन के लिए आवश्यक है कि शिक्षा महाविद्यालय के विविध कार्य–कलापों मे पुस्तकालयों को भी सहभागी बनाया जाए।
- छात्राध्यापक जब शिक्षण अभ्यास के लिए विद्यालयों में जा रहे हों, तो उन्हें आवश्यक मूल्यों की सूची दे दें। यह निर्देश भी दे दें कि उन्हें इन्हीं नियमों के अनुसार कक्षा कार्य और छात्रों के साथ व्यवहार करना है। शिक्षक के मूल्यों की रक्षा करना उनका कर्त्तव्य है।
- छात्राध्यापकों को मूल्यों के अनुरूप ही कार्य करना है। इन नियमों का पालन करना उनके लिए अनिवार्य है। एक पत्रक पर छात्राध्यापकों से हस्ताक्षर करा लें कि वे अवश्य ही एक शिक्षक के मूल्यों का पालन करेंगें। जब एक हस्ताक्षर करके वे अपनो सहमति न दे दें उन्हें शिक्षण कार्य न करने दिया जाए।

अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में मूल्य मीमांसा का होना अनिवार्य है क्योंकि यहीं से एक व्यक्ति प्रशिक्षण प्राप्त करके शिक्षक बनता है और विद्यालय में जाकर रा” ट्र

के भविष्य का निर्माण करता है तथा ये अपेक्षा रहती है कि वह विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर सके।

सन्दर्भ सूचि :–

1. गुप्त, डॉ. नत्थूलाल : मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005.
2. पाण्डेय, डॉ. कामता प्रसाद : शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, विश्व विद्यालय–प्रकाशन, वाराणसी, 2005.
3. पाण्डेय, रामशकल : शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
4. माथुर, डॉ. एस.एस. : शिक्षा के दार्शनिक व सामाजिक आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2009.
5. सिन्ध, अतुम कुमार : प्राचीन भारतीय वैयक्तिक एवं सामाजिक मूल्यबोध, उमा प्रकाशन, इलाहाबाद, 1981–82.
6. श्री वास्तव, डॉ. सुषमा अगवाल, डॉ. विनितिः समाज में मूल्यों का परिवर्तन परिदृश्य एवं उच्च शिक्षा, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2008.